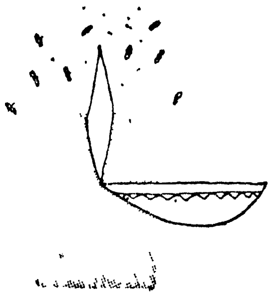


'मख़्दूम'

और उनकी शायरी



सम्पादक

प्रकाश पण्डित

राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली

प्रथम संस्करण
अप्रैल १९५९

मूल्य
डेढ़ रुपया

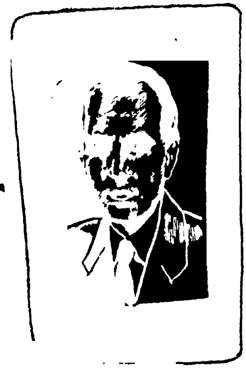
प्रकाशक
राजपाल एण्ड सन्ज़
कश्मीरी गेट, दिल्ली

मुद्रक
युगान्तर प्रेस
डफ़रिन पुल, दिल्ली

सूची

बिखरी हुई रंगीं किरनों को आंखों से चुनकर लाता हूं
फ़ितरत के परीशां नग़्मों से फिर अपना गीत बनाता हूं

जीवनी



" 'मख्दूम' इन दिनों अंडर-ग्राउँड (Under-ground) हैं।"

" 'मख्दूम' इन दिनों जेल में हैं।"

" 'मख्दूम' पर हिंसा द्वारा क्रान्ति लाने का आरोप लगाया गया है।"

" 'मख्दूम' हैदराबाद स्टेट एसेम्बली का मैम्बर चुन लिया गया है।"

" 'मख्दूम' ने अमुक जल्से में दो घंटे तक भाषण दिया और जनता ने उसे कंधों पर बिठाके उसका जुलूस निकाला।"

ये १६४२ से १६५२ तक का काल था, जिसमें 'मख्दूम' के सम्बंध में अधिकतर इसी प्रकार के समाचार मिलते थे। और यह समाचार कभी-कभार ही सुनने में आता था कि उसने एक नई नज़्म भी लिखी है।

मेरे इस लेख का विषय यद्यपि 'मख्दूम' के साहित्यिक जीवन और उसकी शायरी तक सीमित है, लेकिन मैं शायर 'मख्दूम' और राजनीतिज्ञ 'मख्दूम' के बीच कोई विभाजन-रेखा खेंचने में स्वयं को असमर्थ पा रहा हूं। वास्तव में 'मख्दूम' की शायरी ही उसकी राजनीति है और उसकी राजनीति उसकी शायरी। और इन दोनों का सम्मिश्रण वह स्वयं है।

अपने शिक्षा-काल में ही उसका सम्बंध विद्यार्थियों के आन्दोलनों से बहुत गहरा था और हैदराबाद की 'निज़ाम-शाही' के अत्याचारों और वहां की जनता की दुर्दशा देखकर तो वह बेतरह तड़प उठता था, रो देता था। इसके अतिरिक्त पग-पग पर उसे देश की पराधीनता का कटु अनुभव होता था, उन समस्त अनुभवों-अनुभूतियों ने मिलजुलकर एक सीधे-सादे विद्यार्थी के मन-मस्तिष्क में एक ऐसा विष घोल दिया कि उसने न केवल अपने खेलने-खाने के दिन, न केवल अपनी जवानी की खूबसूरत बहारें, बल्कि जनता के कल्याण और देश की स्वतंत्रता के संग्राम में अपना सब-कुछ अर्पण कर दिया। अपने बीवी-बच्चों के गुज़ारे का अच्छा-ख़ासा साधन, हैदराबाद सिटी कालेज की प्रोफ़ेसरी, छोड़कर कम्युनिस्ट पार्टी का Whole-timer सदस्य बन गया। और आज अपनी अनथक सेवा और बलिदान द्वारा वह हैदराबाद का एक प्रिय जन-नेता है। लोग उसके पास अपने दुख-दर्द का दुखड़ा लेकर आते हैं और वह स्वयं भी उनका दुख-दर्द बटाने उनकी अंधेरी और सेलन-भरी कोठरियों और घास-फूंस की झोंपड़ियों में जाता है। हैदराबाद का कोई राजनीतिक तथा साहित्यिक अधिवेशन उस समय तक फीका और अपूर्ण प्रतीत होता है जब तक 'मख्दूम' उसमें भाग न ले।

'मख्दूम' का शाब्दिक अर्थ है—'सेव्य'। लेकिन अपने नाम के उलट वह दूसरों की सेवा को अपना धर्म मानता है। पिछले दिनों (यह १९५८ ई० की बात है) गुरुदत्त नामक बम्बई के एक फ़िल्म-निर्माता और निर्देशक ने जब उसे अपनी

फ़िल्मों के लिए गीत लिखने और पारिश्रमिक-स्वरूप हज़ारों रुपये देने की पेशकश की तो उसने सबसे पहला प्रश्न जो किया, वह यह था कि क्या हैदराबाद में रहते हुए वह यह काम कर सकेगा ?

"यह तो संभव नहीं", गुरुदत्त ने फ़िल्मी आवश्यकता की दृष्टि से कहा, "रहना आपको यहीं पड़ेगा।"

'मख़्दूम' ने हां-ना कहे बिना दूसरे दिन हैदराबाद का टिकट कटवा लिया।

यहां यह चर्चा असंगत न होगी कि आजकल फ़िल्मी गीत लिखना एक यांत्रिक और इस कारण काफ़ी कठिन कार्य हो गया है। केवल वही शायर या कवि गाने लिख सकता है जो म्यूज़िक डायरेक्टर की पहले से बनाई या चुराई हुई धुनों पर बोल फ़िट कर सके—और वह भी स्थिति (Situation) के मुताबिक़। लेकिन 'मख़्दूम' की एक नज़्म 'चारागर' (जो इस संग्रह में संग्रहीत है और जिसके बोल हैं—"इक चम्बेली के मंडवे तले" की धुन बनाकर और प्रोड्यूसरों को सुनाकर हैदराबाद का एक व्यक्ति म्यूज़िक डायरेक्टर बन गया है।

'मख़्दूम' से मुलाक़ात से पहले मेरे मस्तिष्क में उसका एक विचित्र चित्र था। तेलंगाना-संग्राम के समाचार पढ़-पढ़कर (जिसका वह हीरो था) मेरे मस्तिष्क में उसके नैन-नक़्श बहुत भयानक रूप धारण करते गये। मैं उसे एक ऐसे मार्शल-लीडर के रूप में देखने लगा जो केवल आदेश देना जानता है, और किसी प्रकार की अवज्ञा सहन नहीं कर सकता। अपनी कुछ नज़्मों में भी वह मुझे पाषाण दीखता था। विशेषत: जब कभी

मैं उसकी नज़्म 'अंधेरा' की ये पंक्तियां पढ़ता :

बाड़ के तारों में उलझे हुए इन्सानों के जिस्म,
और इन्सानों के जिस्मों पे वो बैठे हुए गिद्ध,
वो तड़ख़ते हुए सर,
मय्यतें[1] हाथ कटी, पांव कटी...

या 'मशरिक़' की ये पंक्तियां :

एक नंगी नाश बे-गोरो-कफ़न[2] ठिठरी हुई,
मग़रबी चीलों का लुक़्मा[3] ख़ून में लिथड़ी हुई,
एक क़ब्रिस्तान जिसमें नौहा-ख़्वां[4] कोई नहीं,
एक भटकी रूह है जिसका मकां कोई नहीं,
इस ज़मीने-मौत-पर्वर्दा[5] को ढाया जाएगा।
इक नई दुनिया, नया आदम बनाया जाएगा।।

तो उसके खेंचे हुए इन चित्रों से मेरे शरीर के रौंगटे खड़े हो जाते थे और मैं नज़्म की पंक्तियों से नज़रें हटाकर जेल, फ़ाक़ा, भीख, गोली, ख़ून आदि शब्दों के इस शायर के व्यक्तित्व के बारे में विचित्र बातें सोचने लगता था। लेकिन १९५३ ई० में जब पहली बार कलकत्ता में सांस्कृतिक समारोह में और फिर दिल्ली में शान्ति-सम्मेलन के अवसर पर मेरी उससे भेंट हुई और मुझे काफ़ी समीप से उसे देखने का मौक़ा मिला तो मेरी कल्पना के नितांत विपरीत वह मुझे अत्यन्त आकर्षक और सरल-स्वभाव दिखाई दिया। मैंने उसे बच्चों के

---

१. लाशें २. क़ब्र और कफ़न के बिना ३. कौर ४. शोकालाप करने वाला ५. मत्यु द्वारा पाली हुई धरती

साथ बच्चा बनते, उन्हीं की तरह तोतली ज़बान में उनसे बातें करते और उनके खिलौनों के लिए अपनी जेबें उलटते देखा। विद्यार्थियों के साथ विद्यार्थियों की समस्याओं पर विद्यार्थियों ही की तरह भावुक ढंग से बातें करते और लतीफ़े सुनाते देखा। साहित्यकारों की बैठकों में अपनी नज़्म पर दाद पाकर इस प्रकार प्रसन्न होते देखा जैसे जीवन में पहली बार उसे दाद मिल रही हो और वह उन सबको अपने से कहीं बड़े और आदरणीय साहित्यकार समझता हो। और मैं समझता हूं 'मख़्दूम' की प्रतिष्ठा में जहां उसके राजनीति-सम्बंधी कला-कौशलता का हाथ है वहां उसकी लोकप्रियता में उसके इन स्वाभाविक गुणों का भी बहुत बड़ा योग है। बच्चे उसे बच्चा समझते हैं। विद्यार्थियों में वह विद्यार्थी नज़र आता है। मज़दूरों के जल्से में उसे एक पढ़े-लिखे बुद्धि-जीवी के रूप में पहचानना काफ़ी कठिन हो जाता है। किसान उसे किसान-भैया समझते हैं, यहां तक कि कभी-कभी स्त्रियां भी उसे अपना सहजातीय समझ बैठती हैं और निःसंकोच अपने मन का भेद उस पर प्रकट कर देती हैं। इस प्रसंग में मुझे दिल्ली की एक घटना कभी नहीं भूलती।

एक बार जब एक छोटी-सी बैठक में 'मख़्दूम' अपनी प्रसिद्ध रोमांटिक नज़्म 'इन्तिज़ार' सुना चुका तो एक नौजवान लड़की ने, जो उसकी नज़्म से बहुत प्रभावित मालूम होती थी, उसे अलग ले जाकर कहा कि वह चाहती है उसका प्रेमी इस नज़्म को अवश्य सुने, लेकिन उसे यह पता नहीं चलना चाहिए कि इसके पीछे मेरा हाथ है।

'मख़्दूम' के हामी भरने पर लड़की ने बताया कि उसका प्रेमी दिल्ली में नहीं बल्कि दिल्ली से तीन सौ मील दूर अमृतसर में रहता है। अतएव तै पाया कि दूसरे दिन प्रातः समय 'मख़्दूम' उसके प्रेमी को ट्रंक-कॉल करेगा और टेलीफ़ोन पर वह नज़्म सुना देगा। और सचमुच दूसरे दिन अपने सौ काम छोड़कर 'मख़्दूम' टेलीफ़ोन पर उस लड़की के प्रेमो से कह रहा था :

रातभर दीदा-ए-नमनाक में[1] लहराते रहे
सांस की तरह से आप आते रहे जाते रहे

'मख़्दूम' की शायरी का प्रारंभ उस ज़माने में हुआ जब 'अंगारे' (सज्जाद ज़हीर, रशीद जहां, अहमद अली आदि प्रगतिशील लेखकों की रचनाओं का एक संकलन—१९३४, जिसे अंग्रेज़ी सरकार ने ज़ब्त कर लिया था) के प्रकाशन द्वारा परम्परागत साहित्य के विरुद्ध विद्रोह शुरू हुआ था। नये लेखक उर्दू सहित्य को नये से नये विषय दे रहे थे, नई से नई शैली से परिचित करा रहे थे, लेकिन प्रयोगकाल होने के कारण साहित्य के लगभग प्रत्येक विद्रोही के यहां अभी कलात्मक परिपक्वता नहीं आई थी। मख़्दूम' की प्रारंभिक शायरी में भी कई जगह भाषा आदि की त्रुटियां मिलती हैं, लेकिन यदि उसकी अन्तर्चेतना को देखा जाय तो वह स्वाभाविक शायर है और कला के उपनियमों से अलग रहकर वह अपने दिल के टुकड़े काग़ज़ पर रख देता है। उसकी शायरी में पहाड़ी झरनों

---

१. सजल नेत्रों में

ऐसा वेग भी है और मैदानी नालों ऐसी मंद गति भी। अपनी शायरी द्वारा वह जनता की सांस्कृतिक भूख भी मिटाता है और उन्हें नये जीवन और नये समाज के निर्माण के लिए प्रयत्नशील होने पर भी उकसाता है। अपने समकालीन शायरों को सम्बोधन करते हुए एक बार उसने कहा था[1] :—

> "तुम अपनी कला, कविता का प्रकाश लेकर जनता के अंधेरे दिलों में उतरते हो। अत्याचारी शासक-वर्ग ने उन्हें विद्या, साहित्य, सभ्यता और संस्कृति, सद्गुणों से वंचित कर रखा है। वे प्यासों की तरह तुम्हारे गिर्द एकत्र हो जाते हैं। उन्हें तुम्हारे शराब के भबकों की आवश्यकता नहीं; उनके जीवन में पहले ही बहुत-सी गंदगियां मौजूद हैं।"

और उसका यह कथन ही उसकी शायरी का तात्विक गुण है। उसके अनुसार शायर अपनी शायरी और कला का तभी सम्मान कर सकता है जब वह अपने देश की जनता, उसकी स्वतंत्रता और समृद्धि के संग्राम का सम्मान करे। जहां तक उसके अपने व्यक्तित्व का सम्बन्ध है, वह न केवल इस संग्राम का सम्मान करता है बल्कि तन, मन, धन हर प्रकार

१. यह घटना इस प्रकार घटी कि उर्दू का प्रसिद्ध प्रगतिशील शायर और 'मख्दूम' का परममित्र 'मजाज़' लखनवी स्वभावानुसार एक मुशायरे में इस बुरी तरह शराब पीकर आया कि उसकी टांगें लड़खड़ा रही थीं और उसके मुंह से शब्द न निकलते थे। अपनी मित्रता के बावजूद 'मख्दूम' ने माइक्रोफ़ोन थामकर 'मजाज़' को बेतरह कोसना शुरू कर दिया।

से इस संग्राम में अपना योग दे रहा है। हैदराबाद के तरुण शायरों के लिए तो वह एकदम पूजनीय है। वहां का कोई तरुण लेखक अथवा शायर ऐसा नहीं जो 'मख़्दूम' से और 'मख़्दूम' की शायरी से प्रभावित न हुआ हो और जिसने 'मख़्दूम' के ढंग में शे'र कहने का प्रयास न किया हो।

हैदराबाद के तरुण लेखक और शायर ही नहीं, हैदराबाद की जनता को भी उसके प्रति असीम स्नेह और श्रद्धा है। इस स्नेह और श्रद्धा का एक उदाहरण देखिये : वहां का एक व्यक्ति, जिसने 'मख़्दूम' को केवल दूर से देखा था, उससे इतना प्रभावित हुआ कि उसने 'मख़्दूम' जैसी अपनी धज बना ली। उसी कोमल स्वर में बात-चीत, उसी जैसे वस्त्र, यहां तक कि जब उसे मालूम हुआ कि 'मख़्दूम' का वज़न उसके वज़न से कम है तो उपवास करके उसने अपना वज़न कम करना शुरू कर दिया।

यह तो ख़ैर एक व्यक्ति का उदाहरण है, ज़रा इस स्नेह और श्रद्धा का अनुमान लगाइये : एक बार 'मख़्दूम' हैदराबाद के एक दस हज़ार के जनसमूह में भाषण दे रहा था और शहर में उसकी गिरफ़्तारी की ख़बरें उड़ रही थीं। सभा समाप्त हो गई लेकिन लोग उसी प्रकार बैठे रहे। 'मख़्दूम' ने इसका कारण पूछा तो लोगों ने बाताया—"हम आपको छोड़कर नहीं जा सकते, वर्ना हुकूमत आपको गिरफ़्तार करलेगी।" 'मख़्दूम' के लाख समझाने पर भी लोग टस से मस न हुए। परेशान होकर उसने कहा "अच्छा आप लोग यहां बैठे रहिये, मैं जाता हूं", लेकिन वहां बैठे रहने की बजाय पूरा जनसमूह 'मख़्दूम' के

साथ हो लिया और जब एक मित्र के मकान पर पहुंचकर 'मख़्दूम' ने फिर कहा कि "मुझे तो आपने घर पहुंचा दिया, अब आप लोग भी अपने-अपने घर जाइये" तब भी कोई वापस जाने को तैयार न हुआ और सब के सब बाहर खड़े उसका प्रसिद्ध गीत :

ये जंग है जंगे-आज़ादी !
आज़ादी के परचम के तले···

गाते रहे ।

'मख़्दूम' नौरस, अंधेरा, इन्तिज़ार, इन्क़िलाब, मशरिक़, हवेली, क़ैद इत्यादि बहुत-सी सुन्दर नज़्मों का रचयिता है, लेकिन जिस गीत या नज़्म ने उसे सबसे अधिक ख्याति प्रदान की और जन-साधारण का लोक-प्रिय शायर बनाया वह नज़्म या गीत यही 'जंगे-आज़ादी' है । यह गीत उसने १६४२ के आन्दोलन-काल में लिखा था, जब कांग्रेस पार्टी ग़ैरक़ानूनी पार्टी क़रार दे दी गई थी । समस्त नेता जेलों में डाल दिए गए थे और चारों ओर एक विचित्र प्रकार की विवशता सी नज़र आती थी । ऐसे में साहित्यकारों की समझ में भी कुछ नहीं आ रहा था कि क्या करें या क्या लिखें ? 'मख़्दूम' ने यह गीत लिखकर उन्हें एक मार्ग सुझाया और केवल साहित्यकारों का ही नहीं स्वतंत्रता-प्रेमी जनता का भी पथ-प्रदर्शन किया । साहित्यिक दृष्टि से कुछ समालोचकों ने इस गीत के बारे में कहा था कि यह प्रौपेगंडा है । इसकी विषय-वस्तु स्थायी नहीं ।" लेकिन 'मख़्दूम' के इस गीत ने सिद्ध कर दिखाया कि यदि लेखक या कवि आत्मानुभव की नींव पर साहित्य-रचना करे तो

रचना अपने समय के साथ कभी नष्ट नहीं होती। आज देश स्वतंत्र है। आज युद्ध समाप्त हो चुका है, लेकिन 'मख़्दूम' का यह गीत आज भी भारत के कोने-कोने में गाया जाता है और कई मज़दूरों और किसानों के जल्सों का तो श्रीगणेश ही इस गीत से होता है। मेरे मतानुसार लोक-प्रियता की यह उपाधि सैंकड़ों साहित्यिक समालोचनाओं पर भारी है और मैं समझता हूं कि इसका एकमात्र कारण वही सद्गुण है कि 'मख़्दूम' जो कुछ लिखता है आत्मानुभव के आधार पर लिखता है। उसकी रचनाओं में उसके अपने दिल की धड़कनें विद्यमान होती हैं।

'मख़्दूम' केवल एक संक्षिप्त से कविता-संग्रह 'सुर्ख़-सवेरा' का रचयिता है और अपनी असाधारण राजनीतिक व्यस्तताओं के कारण एक समय से इसने शायरी छोड़ रखी है, फिर भी किसी-न-किसी वर्ष यह समाचार मिल ही जाता है कि उसने एक नई नज़्म लिखी है।

आधुनिक उर्दू शायरी के इस 'मख़्दूम' (सेव्य) लेकिन वास्तविक ख़ादिम (सेवक) की संक्षिप्त जीवनी स्वयं उसकी ज़बान से सुनिये :

"मेरा जन्म १९१० ई० में हैदराबाद (दक्खन) के एक गांव में हुआ। पांच वर्ष की आयु में पिता का देहांत हो गया। चचा की संरक्षकता में मदरिसे और घर पर कुछ धार्मिक शिक्षा प्राप्त की और अरबी-फ़ारसी सीखी और १९३७ में उस्मानिया यूनीवर्सिटी से एम० ए० पास किया। १९३३ से शे'र कहना शुरू किया। प्रारंभ रोमांटिक नज़्मों से हुआ लेकिन शीघ्र ही आर्थिक और राजनीतिक मूल्यों की ओर प्रवृत्त हो

गया। उन्हीं दिनों एक पुस्तक 'टैगोर और उनकी शायरी' लिखी। कुछ ड्रामे भी लिखे और खेले। १९३४ ई० में मार्क-सिज़्म से परिचित हुआ। १९३६ ई० में हैदराबाद में बड़ी कठिन परिस्थितियों में प्रगतिशील-लेखक-संघ की नींव डाली। साहित्य और विद्यार्थियों के आन्दोलनों में भाग लेता रहा। ख़ुफ़िया तौर पर मार्कसी शिक्षा-दीक्षा की एक मण्डली बनाई। फिर कुछ दिनों की बेरोज़गारी के बाद सिटी कालेज में लेक्चरर होगया। १९४४ ई० में नौकरी छोड़कर सीधे-स्वभाव कम्युनिस्ट पार्टी का Whole-timer सदस्य बन गया और विद्रोह के आरोप में तीन महीने की जेल काटी। १९४६ ई० में राज-नीतिक-संघर्ष के सम्बंध में Under-ground होकर तेलंगाना में काम करता रहा। मार्च १९५१ में गिरफ़्तार हुआ और दिसम्बर में चुनाव से कुछ पहले रिहा होकर हैदराबाद एसेम्बली का मैम्बर चुना गया।

शान्ति और मज़दूर-आन्दोलन के सम्बंध में रूस, चीन, पूर्वी और पश्चिमी यूरोप की यात्रा कर चुका हूं। मेरा एक-मात्र कविता-संग्रह 'सुर्ख़-सवेरा' पहली बार १९४५ ई० में प्रकाशित हुआ था।"

चयन



शायर

कुछ क़ौसे-क़ज़ह से[1] रंगत ली, कुछ नूर[2] चुराया तारों से।
बिजली से तड़प को मांग लिया, कुछ कैफ़[3] उड़ाया बहारों से ॥

फूलों से महक, शाख़ों से लचक और मंडवुओं से[4] ठंडा साया।
जंगल की कंवारी कलियों ने दे डाला अपना सर्माया ॥

बदमस्त जवानी से छीनी कुछ बेफ़िक्री, कुछ अल्हड़पन।
फिर हुस्ने-जुनूं-परवर ने[5] दी आशुफ़्तासरी[6], दिल की धड़कन ॥

बिखरी हुई रंगीं किरनों को आंखों से चुनकर लाता हूं।
फ़ितरत के[7] परीशां नग़मों से फिर अपना गीत बनाता हूं ॥

फ़िर्दौसे-ख़याली में[8] बैठा इक बुत को तराशा करता हूं।
फिर अपने दिल की धड़कन को पत्थर के दिल में भरता हूं ॥

◇ ◇ ◇

---

१. इन्द्रधनुष से २. प्रकाश ३. आनन्द ४. बेलों के छत्तों से ५. उन्मादपालक सौन्दर्य ने ६. अस्त-व्यस्त ७. प्रकृति के ८. कल्पित जन्नत।

मैं

थक के रह जाते हैं इस्तदलाल के[1] जिस जा[2] क़दम,
टूट जाता है पहुंच कर जिस जगह मन्तिक़ का[3] दम ।

ख़्वाबे-अक़्लो-होश की[4] महजूल[5] ताग्रबीरों से[6] दूर,
फ़लसफ़ी की 'किस तरह' और 'क्यों' की ज़ंजीरों से दूर।

मेरे रहने का जहाने - जाविदानी[7] और है,
दिल की दुनिया-ए-निहां की[8] ज़िन्दगानी और है ।

ख़ुद - तराशीदा[9] बुते-नाज़-आफ़रीं[10] मेरा वुजूद[11],
मेरी ज़ाते-पाक[12] मसजूदे - जहाने - हस्तो-बूद[13] ।

दूसरा कोई नहीं रहता जहां रहता हूं मैं,
अपने सेलाबे-ख़ुदी में[14] आप ही बहता हूं मैं ।

मेरे सिजदों के[15] लिए ही वक़्फ़ है[16] मेरी जबीं[17],
मेरी अक़्लीमे - इना में[18] दूसरा कोई नहीं ।

◇ ◇ ◇

---

१. तर्क के २. जगह ३. तर्क का ४. बुद्धि और होश के सपने की ५. अधम ६. स्वप्न - फलों से ७. शाश्वत संसार ८. गुप्त संसार की ९. स्वयं का तराशा हुआ १०. गर्व-पात्र बुत (मूर्ति) ११. देह १२. पवित्र अस्तित्व १३. व्यापक संसार के लिए पूज्य १४. स्वाभिमान या अहं की बाढ़ (आधिक्य) में १५. माथा टेकने के १६. समर्पण १७. माथा १८. स्वाभिमान के महाद्वीप में

याद है

खेलता था जब लड़कपन से तेरा रंगीं[1] शबाब[2],
हट रही थी माहे-आलमताब के[3] रुख़ से[4] निक़ाब[5],
ज़िन्दगी थी हुस्ने-नौ-आग़ाज़ का[6] रंगीन ख़्वाब,
याद है वो नौजवानी का ज़माना याद है।

जब कि साज़े-ज़िन्दगी नग़मात से मा़अमूर[7] था,
ज़र्रा-ज़र्रा मेरे दिल की ख़ाक का जब तूर[8] था,
मैं अकेला ही नहीं सारा जहां मसरूर[9] था,
याद है वो नौजवानी का ज़माना याद है।

खेलती थी नौजवानी जब कि हाथों में तेरी,
ज़िन्दगी की बारिशें थीं जल्वागाहों में[10] तेरी,
रक़्स[11] करती थी तमन्नाएं निगाहों में तेरी,
याद है वो नौजवानी का ज़माना याद है।

हर अदा-ए-हुस्न पर होता था दिल जब बेक़रार,
जब रहा करता मुलाक़ातों का अक्सर इन्तिज़ार,
जब तबीयत तुझसे मिलना चाहती थी बार-बार,
याद है वो नौजवानी का ज़माना याद है।

१. रंगीन २. यौवन ३. संसार को प्रकाशमान करने वाले चांद के ४. चेहरे से ५. पर्दा ६. नवजात सौन्दर्य का ७. परिपूर्ण ८. तूर पर्वत का नाम (जहां बिजली चमकी थी और हज़रत मूसा ने ख़ुदा से बातें की थी) ९. उल्लसित १०. रंग-महलों में ११. नृत्य

रात-भर सोने न देती थी मसर्रत ईद की,
जब कि रहती थी दिलों में बेक़रारी दीद की[१] ,
माहताबे-ईद[२] बन जाती किरन ख़ुरशीद की[३],
याद है वो नौजवानी का ज़माना याद है।

रात आती थी सुनाने सोज़ का[४] पैग़ाम जब,
मश्क़े-तहरीरे-जुनूं[५] बनता था तेरा नाम जब,
था न कुछ पेशे-नज़र[६] इस इश्क़ का अंजाम[७] जब,
याद है वो नौजवानी का ज़माना याद है।

◇ ◇

१. दर्शन की २. ईद का चांद ३. सूरज की ४. ताप का
५. उन्माद की लिखावट का अभ्यास ६. दृष्टिगोचर ७. परिणाम

इन्तिज़ार

रात भर दीदा - ए - नमनाक में[1] लहराते रहे।
सांस की तरह से आप आते रहे, जाते रहें ॥

ख़ुश थे हम अपनी तमन्ना का जवाब आयेगा।
अपना अरमान बर - अफगंदा - निक़ाब[2] आयेगा ॥

नज़रें नीची किए, शर्माये हुए आयेगा।
काकुलें[3] चेहरे पे बिखराये हुए आएगा ॥

आ गई थी दिले - मुज़्तर में[4] शिकेबाई[5] सी।
बज रही थी मेरे ग़म - ख़ाने में शहनाई सी ॥

पत्तियां खड़कीं तो समझा कि लो आप आ ही गये।
सिज्दे मसरूर थे कि माअ़बूद को[6] हम पा ही गये ॥

---

१. सजल नेत्रों में २. निक़ाब उतारे हुए ३. केश ४. बेक़रार दिल में ५. सन्तोष ६. पूज्य (प्रेयसी)

शब के[1] जागे हुए तारों को भी नींद आने लगी ।
आपके आने की इक आस थी, अब जाने लगी ॥

सुबह ने सेज से उठते हुए ली अंगड़ाई ।
ओ सबा[2] ! तू भी जो आई तो अकेली आई ॥

मेरे महबूब मेरी नींद उड़ाने वाले ।
मेरे मसजूद[3] मेरी रूह पे छाने वाले ॥

आ भी जा ताकि मेरे सिज्दों का अर्मां[4] निकले ।
आ भी जा ता[5] तेरे क़दमों पे मेरी जां निकले ॥

◇ ◇ ◇

१. रात के २. प्रभात-समीर ३. पूज्य (महबूब) ४. अरमान
५. ताकि

पशेमानी[1]

ऐ ख़ुशा[2] वो दिन कि जब तुझ से मुलाक़ातें न थीं,
ऐसे मुश्किल दिन न थे, ऐसी क़ठिन रातें न थीं।

जब दिले - नादान यूं बेतरह भर आता न था,
आतिशे - ग़म[3] तेज़ करने वाली बरसातें न थीं।

शब के सन्नाटे में चुपके-चुपके रो लेना न था,
आंख में आंसू न थे, लब पर[4] मुनाजातें न[5] थीं।

जब हरीमे-दिल में[6] रोशन ही न थे ग़म के चिराग़,
चांदनी रातें थीं ऐसी, चांदनी रातें न थीं।

◇ ◇ ◇

१. पश्चात्ताप २. बहुत अच्छा (सौभाग्य था) ३. ग़म की आग
४. होंट पर ५. प्रार्थनाएँ ६. दिल-रूपी घर में

इन्तिसाब[1]

हमको बेमायगी-ए-ज़ब्त[2] दिखाना ही पड़ा,
दिल की बातों को तेरे सामने लाना ही पड़ा ।

मैं जो ख़लवत में[3] भी डरता था सुनाने के लिए,
सरे - बाज़ार[4] वही गीत सुनाना ही पड़ा ।

खेंच लाया तुझे पर्दे से मेरा ज़ौक़े-नियाज़[5],
मेरे पर्दे में तुझे जलवा दिखाना ही पड़ा ।

थरथराते हुए हाथों से, धड़कते दिल से,
तेरे रुख़ से[6] तेरे आंचल को हटाना ही पड़ा ।।

◇ ◇ ◇

---

१. सम्बन्ध २. सहनशीलता की कमी ३. एकांत में ४. बीच बाज़ार में ५. दर्शन-अभिलाषा ६. चेहरे से

चारागर[1]

इक चंबेली के मंडवे[2] तले
मैकदे से[3] ज़रा दूर, उस मोड़ पर
दो बदन
प्यार की आग में जल गये
प्यार हर्फ़े-वफ़ा[4]
प्यार उनका ख़ुदा
प्यार उनकी चिता
दो बदन
ओस में भीगते, चांदनी में नहाते हुए
जैसे दो ताज़ा-रौ[5] , ताज़ा-दम[6] फूल, पिछले पहर
ठंडी-ठंडी सुबक-रौ[7], चमन की हवा
सर्फ़े-मातम[8] हुई
काली-काली लटों से लिपट, गर्म रुख़्सार[9] पर
एक पल के लिए रुक गई
हमने देखा उन्हें
दिन में और रात में

१. उपचारक २. बेल के छत्ते ३. मधुशाला से ४. वफ़ा का अक्षर
५, ६. नव-स्फुटित ७. मन्दगति से चलने वाली ८. सोग में व्यतीत
६. गाल

नूरो-ज़ुल्मात में[1]
मस्जिदों के मनारों ने देखा उन्हें
मन्दिरों के किवाड़ों ने देखा उन्हें
मैकदे की दराड़ों ने देखा उन्हें
अज़ अज़ल[2] ता अबद[3]
ये बता चारागर
तेरी ज़ंबील में[4]
नुस्ख़ा-ए-कीमिया-ए-मुहब्बत[5] भी है ?
कुछ इलाजो-मुदावा-ए-उल्फ़त[6] भी है ?
इक चंबेली के मंडवे तले
मैकदे से ज़रा दूर, उस मोड़ पर
दो·बदन
प्यार की आग में जल गये
चारागर !

◇ ◇ ◇

१. प्रकाश और अन्धकार में २. आदि से ३. अन्त तक ४. झोली में ५. प्रेम को सोने ऐसा सच्चा बनाने का नुस्खा ६. प्रेमोपचार

आज की रात न जा !

रात आई है, बहुत रातों के बाद आई है
देर से, दूर से आई है, मगर आई है
मरमरीं[1] सुबह के हाथों में छलकता हुआ जाम आएगा
रात टूटेगी, उजालों का सलाम आयेगा
आज की रात न जा !

ज़िन्दगी लुत्फ़ भी है, ज़िन्दगी आज़ार[2] भी है
साज़ो - आहंग[3] भी, ज़ंजीर की झंकार भी है
ज़िन्दगी दीद[4] भी है, हसरते-दीदार[5] भी है
ज़हर भी, आबे-हयाते-लबो-रुख़्सार[6] भी है
ज़िन्दगी दार[7] भी है, ज़िन्दगी दिलदार भी है
आज की रात न जा !

आज की रात बहुत रातों के बाद आई है
कितनी फ़र्खुन्दा[8] है शब[9], कितनी मुबारक है सहर[10]
वक़्फ़[11] है मेरे लिए तेरी मुहब्बत की नज़र
आज की रात न जा !

◇ ◇ ◇

---

१. संगमरमर की-सी (श्वेत) २. दुःख, पीड़ा ३. साज और आलाप ४. दर्शन ५. दर्शनों की अभिलाषा ६. कपोल और होंट-रूपी अमृत ७. फांसी ८. सुखदायक ९. रात १०. सुबह ११. समर्पण

रक़्स[१]

वो रूप, रंग, राग का पयाम[२] ले के आ गया
वो कामदेव की कमान, जाम ले के आ गया
वो चाँदनी की नर्म-नर्म आँच में तपी हुई
समुंदरों के झाग की बनी हुई जवानियां
हरी-हरी रविश पे[३] हम-क़दम भी, हम-कलाम[४] भी
बदन महक-महक के चल
कमर लचक-लचक के चल
क़दम बहक-बहक के चल
वो रूप, रंग, राग का पयाम ले के आ गया
वो कामदेव की कमान, जाम ले के आ गया
इलाही[५]! ये बिसाते-रक़्स[६] और भी बसीत[७] हो
सदा-ए-तेशा[८] कामरां[९] हो, कोहकन[१०] की जीत हो

◇ ◇ ◇

१. नृत्य २. संदेश ३. क्यारियों के बीच के छोटे मार्गों पर ४. वार्तालाप-कर्ता ५. हे भगवान ! ६. नृत्य-स्थल ७. विस्तृत ८. (मजदूर के) तेशे की आवाज़ ९. सफल, भाग्यवान १०. फ़रहाद (जिसने अपनी प्रिया के पाने के लिए पहाड़ खोदा था)

सिजदा

फिर उसी शोख़ का ख़याल आया,
फिर नज़र में वो ख़ुश-जमाल[१] आया।
फिर तड़पने लगा दिले-मुज़्तर[२],
फिर बरसने लगा है दीदा-ए-तर[३]।
याद आईं वो चांदनी रातें,
वो हंसी, छेड़, दिल-लगी, बातें।
शबे-तारीक[४] है, ख़मोशी है,
कुल जहां महवे-ऐश-कोशी[५] है।
लुत्फ़ सिजदों में आ रहा है मुझे,
छुपके कोई बुला रहा है मुझे।
चूड़ियां बज रही हैं हाथों की,
आई आवाज़ उसकी बातों की।
उड़ रहा है ग़ुबारे-नूरे-बदन[६],
फैलती जा रही है बू-ए-बदन।
मौजे-तसनीमो-कैफ़े-ख़ुल्दे-बरीं[७],
जगमगाता बदन, चमकती जबीं[८]।
अपने आंचल में मुंह छुपाए हुए,
आ रहा है क़दम बढ़ाए हुए।

---

१. सुन्दर २. आतुर मन ३. सजल नेत्र ४. अंधेरी रात ५. ऐश में मग्न ६. शरीर के प्रकाश का गुबार ७. जन्नत की नहर तसनीम की लहर और जन्नत की मादकता ८. माथा

नग़मे पाज़ेब के[१] सुनाते हुए,
बख़्ते - ख़ुफ़्ता[२] मेरे जगाते हुए।
इश्वा-ओ-नाज़ का[३] फ़ुसूं[४] लेकर,
साथ इक लश्करे-जुनूं[५] लेकर।
ज़ोर से मुस्कराता आता है,
बिजलियां सी गिराता आता है।
वो कि रंगीं किरन तबस्सुम[६] की,
इक मुसलसल[७] लड़ी तरन्नुम[८] की।
पर्दा-ए-तन में[९] राग पोशीदा[१०],
राग वो जिसमें आग पोशीदा।
बांसुरी - सी बजाये जाता है,
आग तन में लगाये जाता है।
एक दुनिया-ए-रंगो-बू[११] बनकर,
ख़ूं-शुदा[१२] दिल की आरज़ू बनकर।
नई दुल्हन की थरथरी बनकर,
उसके होंटों की कपकपी बनकर।
मेरे दिल में समा गया कोई।
मेरी हस्ती पे छा गया कोई॥

◇ ◇ ◇

---

१. पांव में पहनने के एक ज़ेवर के २. सोये भाग्य ३. हाव-भाव या अदाओं का ४. जादू ५. उन्माद की सेना (अधिकता) ६. मुस्कराहट ७. निरंतर ८. गान ९. शरीर के पर्दे में १०. निहित ११. रंग तथा सुगंधि की दुनिया १२. घायल

अंधेरा

रात के हाथ में इक कासा-ए-दरयूज़ागरी[1]
ये चमकते हुए तारे, ये दमकता हुआ चांद
भीख के नूर[2] में, मांगे के उजाले में मगन
यही मलबूसे-उरूसी[3] है, यही इनका कफ़न
इस अंधेरे में वो मरते हुए जिस्मों की कराह
वो अज़ाज़ील के[4] कुत्तों की कमींगाह[5]
वो तहज़ीब के ज़ख़्म
ख़न्दक़ें
बाड़ के तार
बाड़ के तारों में उलझे हुए इन्सानों के जिस्म
और इन्सानों के जिस्मों पे वो बैठे हुए गिद्ध
वो तड़ख़ते हुए सर
मय्यतें[6] हाथ कटी, पांव कटी
लाश के ढांचे के इस पार से उस पार तलक
सर्द हवा
नौहा-ओ-नाला-ओ-फ़र्य्यादकुनां[7]

---

१. भिक्षा-पात्र २. प्रकाश ३. शादी के कपड़े ४. शैतान ५. घात में छुपकर बैठने की जगह ६. लाशें ७. आर्त्तनाद करती हुई

शब के सन्नाटे में रोने की सदा[1]
कभी बच्चों की, कभी माओं की
चांद के, तारों के मातम की सदा
रात के माथे पे आज़ुर्दा[2] सितारों का हुजूम
सिर्फ़ खुरशीदे-दरख़्शंदा के[3] निकलने तक है
रात के पास अंधेरे के सिवा कुछ भी नहीं !
रात के पास अंधेरे के सिवा कुछ भी नहीं !!

◇ ◇ ◇

१. आवाज़ २. उदास ३. प्रकाशमान सूरज

टूटे हुए तारे

कहा है मुझसे ये टूटे हुए सितारों ने,
फ़लक[1] की गोद से छूटे हुए सितारों ने।

नवा-ए-दर्द[2] मेरी कहकशां में[3] डूब गई,
वो चांद-तारों के सैले-रवां में[4] डूब गई।

समन-बराने-फ़लक ने[5] शरर को[6] देख लिया,
ज़मीन वालों के दिल को, नज़र को देख लिया।

वो मेरी आह का शोअ़ला था, कोई तारा था,
वो ख़ाकदां का[7] मुसाफ़िर था, माहपारा[8] था।

दिलों में बैठ गया तीरे-आरज़ू[9] बनकर,
फ़लक पे फैल गया इश्क़ का लहू बनकर।

ये साकिनाने-फ़लक[10] दर्दो-ग़म को क्या जानें,
ये ख़ाकियों को[11] रहे-बेशो-कम को[12] क्या जानें।

१. आकाश २. दर्द-भरी आवाज़ ३. आकाश-गंगा में ४. बहती बाढ़ में ५. आकाश के हसीनों ने ६. चिंगारी को ७. धरती का ८. चांद का टुकड़ा ९. अभिलाषा का तीर १०. आकाशवासी ११. मिट्टी के पुतलों (मनुष्य) की १२. कम और अधिक के ढंग को

वो ग़म को पी तो गये, आंसुओं को पी न सके,
ज़मीं के ज़हर को पीकर वो और जी न सके।

फ़लक से गिरने लगे टूट-टूटकर तारे,
ज़मीं पे ढेर हुए तीरे-आह के[1] मारे।

ये आग और भी ऊपर निकल गई होती,
हरीमे-अर्श को[2] छूकर निकल गई होती।

◇ ◇ ◇

१. आह-रूपी तीर के २. सबसे ऊंचे आकाश की हद को

सितारे

जाओ-जाओ छुप जाओ सितारो, जाओ-जाओ तुम छुप जाओ !

रात-रातभर जाग-जाग कर किसको गीत सुनाते हो ?
चुप-चुप रहकर झिलमिल-झिलमिल किस भाषा में गाते हो ?
जाओ-जाओ छुप जाओ सितारो, जाओ-जाओ तुम छुप जाओ!

रात अंधेरी काली-काली किस सज-धज से आई है,
मेरा क्या मैं हूं सौदाई, तारों की रुसवाई है।
जाओ-जाओ छुप जाओ सितारो, जाओ-जाओ तुम छुप जाओ !

हम जिस नगरी में रहते हैं वो नगरी क्या देखोगे ?
हम जिस बस्ती में बसते हैं वो बस्ती क्या देखोगे ?
जाओ-जाओ छुप जाओ सितारो, जाओ-जाओ तुम छुप जाओ !

आप तन-आसां[1] राजदुलारे, मैं वहशी तूफ़ानबदोश[2] ,
मेरी दुनिया जद्ले-मुसलसल[3] , आपकी दुनिया सैले-खमोश[4] ।
जाओ-जाओ छुप जाओ सितारो, जाओ-जाओ तुम छुप जाओ!

---

१. आराम-पसंद २. कंधे पर तूफ़ान लिये हुए ३. निरंतर संघर्ष
४. चुप्पी की बाढ़ (अधिकता)

झूम-झूमकर गरज-गरजकर बादल बनकर छाना है,
धरती के प्यासे होंटों में अमृत-रस बरसाना है।
जाओ-जाओ छुप जाओ सितारो, जाओ-जाओ तुम छुप जाओ !

◇ ◇ ◇

मशरिक़[1]

जहल[2] , फ़ाक़ा, भीक, बीमारी, नजासत का[3] मकान,
ज़िन्दगानी, ताज़गी, अक़्लो-फ़रासत का[4] मसान।

वहम - ज़ाईदा[5] ख़ुदाओं का, रिवायत[6] का ग़ुलाम,
परवरिश पाता रहा है जिसमें सदियों का जुज़ाम[7]।

झड़ चुके हैं दस्तो-बाज़ू[8] जिसके, उस मशरिक़ को देख,
खेलती है सांस सीने में, मरीज़े - दिक़ को[9] देख,

एक नंगी नाश[10], बे-गोरो-कफ़न[11], ठिठरी हुई,
मग़रिबी[12] चीलों का लुक़्मा[13], ख़ून में लिथड़ी हुई।

एक क़ब्रिस्तान जिसमें 'हूं' न 'हां' कुछ भी नहीं,
इक भटकती रूह है जिसका मकां[14] कुछ भी नहीं।

१. पूरब २. मूर्खता ३. मलिनता ४. बुद्धि तथा चातुर्य ५. भ्रम से उत्पन्न ६. परम्परा ७. कोढ़ ८. हाथ और बाँहें ९. क्षय रोगी को १०. लाश ११. कफ़न और क़ब्र के बिना १२. पश्चिमी १३. कौर १४. निवास-स्थान

पैकरे-माज़ी का[१] इक बे-रंग और बे-रूह ख़ोल,
एक मर्गे - बेक़यामत[२] , एक बे-आवाज़ ढोल।

इक मुसलसल[३] रात जिसकी सुबह होती ही नहीं,
ख़्वाबे - असहाबे - कह्फ़[४] को पालने वाली ज़मीं

इस ज़मीने - मौत - पर्वर्दा को[५] ढाया जाएगा,
इक नई दुनिया, नया आदम[६] बनाया जाएगा।

◇ ◇ ◇

१. अतीत के आकार का २. प्रलय-रहित मृत्यु ३. निरन्तर
४. गुफा-निवासियों के सपने ५. मृत्यु द्वारा पाली हुई धरती को
६. मानव

पुर्सा[1]

(बच्चे की मौत पर मां की सेवा में)

न रो हमनशीं[2] ये जहां और ही है,
यहां की रहे-इम्तिहां[3] और ही है।
तेरे दिल की ठंडक को तारों में ढूंडा,
तेरे फूल को मर्ग़ज़ारों में[4] ढूंडा।
तेरे आंसुओं के चिराग़ों से ढूंडा,
तेरे दिल के नौख़ेज़[5] दाग़ो से ढूंडा।
बहारों को लौटाने वाली हवायें,
न तेरी हवायें न मेरी हवायें।
मुरादों को बर लाने वाली[6] दुआयें,
न तेरी दुआयें न मेरी दुआयें।
दुआयें भी बेबस, हवायें भी बेबस,
तेरी और मेरी इल्तिजायें[7] भी बेबस।
न वो और न मैं और न तू जाविदानी[8],
अज़ल के[9] मुसव्विर का[10] हर नक़्श[11] फ़ानी[12]।

◇ ◇ ◇

१. मृतक के सम्बन्धियों से शोक प्रकट करना २. साथी ३. परीक्षा का तरीका ४. उपवनों में ५. नवजात ६. पूरी करने वाली ७. प्रार्थनाएं ८. अमर ९. आदिकाल के १०. चित्रकार का ११. चित्र १२. नश्वर

धुआं

जन्नतें ख़ाक पे जिस रात उतर आई थीं,
बदलियां रह्मते - यज़्दां की[1] जहां छाई थीं।

इश्‌रतो - ऐश की जिस जा[2] कि फ़रावानी[3] थी,
जिस जगह जलवा-फ़िगन[4] रूहे-जहाँबानी[5] थी।

हां वहीं मेरे दिले - ज़ार ने ये भी देखा,
हां मेरी चश्मे - गुनह्‌गार ने[6] ये भी देखा।

ख़ूने-दहकां में[7] इमारत के[8] सफ़ीने[9] थे रवां[10],
हर तरफ़ अद्‌ल[11] की जलती हुई मय्यत का[12] धुआं।

◇ ◇ ◇

१. ख़ुदा की अनुकम्पा की २. जगह ३. बहुलता ४. प्रत्यक्ष ५. संसार को चलाने वाली आत्मा ६. पापी आंख ने ७. किसान के लहू में ८. वैभव के ९. नौकाएं १०. चल रहे थे ११. न्याय १२. लाश का

तिलंगन

फिरने वाली खेत की मेंड़ों पे बल खाती हुई,
नर्मो - शीरीं[1] क़हक़हों के फूल बरसाती हुई।
कंगनों से खेलती, औरों से शर्माती हुई,
अजनबी को देखकर ख़ामोश मत हो, गाये जा !
हां तिलंगन गायेगा, बांकी तिलंगन गाये जा !!

अर्ज़[2] यकसर गोश है[3], ख़ामोश हैं सब आस्मां,
राग सुनने रुक गये हैं, बादलों के कारवां,
हां तराना छेड़ जंगल का मेरी गुन्चा-दहां[4],
अजनबी को देखकर ख़ामोश मत हो, गाये जा !
हां तिलंगन गाये जा, बांकी तिलंगन गाये जा !!

देखने आते हैं तारे शब में सुनकर तेरा नाम
जल्वे सुबहो-शाम के होते हैं तुझसे हम-कलाम[5]
देख फ़ितरत कर रही है तुझको झुक-झुककर सलाम
अजनबी को देखकर ख़ामोश मत हो, गाये जा !
हां तिलंगन गाये जा, बांकी तिलंगन गाये जा !!

---

१. मृदुल २. धरती ३. सुनने में मग्न है ४. कली के से मुंह वाली ५. सम्बोधित

दुख़्तरे-पाकीज़गी[1], ना-आशना-ए-सीमो-ज़र[2],
दश्त की[3] ख़ुदरौ[4] कली, तहज़ीबे-नौ से[5] बेख़बर,
तेरी खस की झोंपड़ी पर झुक पड़े सब बामो-दर[6],
अजनबी को देखकर ख़ामोश मत हो, गाये जा !
हां तिलंगन गाये जा, बांकी तिलंगन गाये जा !!

ले, चला जाता हूं आंखों में लिये तस्वीर को,
ले, चला जाता हूं पहलू में छुपाये तीर को,
ले, चला जाता हूं, फैला राग की तनवीर को[7],
अजनबी को देखकर ख़ामोश मत हो, गाये जा !
हां तिलंगन गाये जा, बांकी तिलंगन गाये जा !!

◇ ◇ ◇

१. पवित्रता की बेटी २. धन-दौलत से अपरिचित ३. जंगल की
४. आप ही आप उगी हुई ५. नई सभ्यता से ६. दरवाजे और छतें
७. आभा को

आतिशकदा[1]

क्या कहूं किन दिलबराने-ख़ास[2] की महफ़िल में हूं ?
क्या बताऊं किन निगाहों में हूं, कैसे दिल में हूं ?

वाजिबो - इमकान की[3] किस हद में हूं मैं क्या कहूं ?
कैसी-कैसी बिजलियों की ज़द में[4] हूं मैं क्या कहूं ?

कितने लब[5], कितनी जबीनें[6], कितने जल्वे[7], कितने तूर[8],
कितनी सुबहों का उजाला, कितने नग़मों का सरूर[9] ।

कितनी नौ-आग़ाज़[10] कलियां, कितने खुशबूदार फूल,
मेरी ठंडी सांस पर होते हैं रंजूर - ओ - मलूल[11] ।

कितने संगीं[12] दिल हैं जो मेरे नशे में चूर हैं,
कितनी रातें हैं जो मेरे नाम से मशहूर हैं ।

क्या कहूं किन आरिज़ों[13] किन काकुलों का[14] साथ है ?
क्या कहूं किन महवशों[15], किन दिलबरों का साथ है ?
कैसे कैसे आतिशीं[16] पैग़म्बरों का साथ है ?

◇ ◇ ◇

१. अग्नि-कुंड २. ख़ास सुन्दरियों की ३. संभावनाओं की ४. पकड़ में ५. होंट ६. माथे ७, ८. तूर (पर्वत) पर ख़ुदा ने बिजली के रूप में अपने दर्शन दिये थे और हज़रत मूसा से बातें की थीं— उसी ओर संकेत है ९. मस्ती १०. नवस्फुटित ११. दुखी और पीड़ित १२. पत्थर जैसे १३. कपोलों १४. केशों का १५. चांद-जैसी सुन्दरियों १६. आग के बने

हवेली

एक बोसीदा[1] हवेली, यानी फ़र्सूदा[2] समाज,
ले रही है नज़अ़ के[3] आ़लम में मुर्दों से ख़िराज[4]।

इक मुसलसल[5] कर्ब में[6] डूबे हुए सब बामो-दर[7],
जिस तरफ़ देखो अंधेरा जिस तरफ़ देखो खंडर।

मारो-कज़्दुम का[8] ठिकाना जिसकी दीवारों के चाक[9],
उफ़ ये रख़्ने[10] किस क़दर तारीक[11], कितने हौलनाक।

जिनमें रहते हैं महाजन, जिनमें बसते हैं अमीर,
जिनमें काशी के ब्राह्मन, जिनमें काबे के फ़क़ीर।

रहज़नों का[12] क़स्रे-शूरअ़[13], क़ातिलों की ख़्वाबगाह,
खिलखिलाते हैं जराइम[14], जगमगाते हैं गुनाह।

जिस जगह कटता है सर इन्साफ़ का ईमान का,
रोज़ो-शब नीलाम होता है जहां इन्सान का।

१. जर्जर २. जीर्ण ३. मरणासन्न दशा के ४. कर ५. निरंतर ६. पीड़ा में ७. छतें और दरवाज़े ८. सांपों और बिच्छुओं का ९, १०. छिद्र ११. अंधेरे १२. डाकुओं का १३. मश्वरे करने का महल (जगह) १४. अपराध

ज़ीस्त को[1] दर्से-अजल[2] देती है जिसकी बारगाह[3],
क़हक़हा बनकर निकलती है जहां हरएक आह।

सीमो-ज़र का[4] देवता जिस जा[5] कभी सोता नहीं,
ज़िन्दगी का भूलकर जिस जा गुज़र होता नहीं।

हंस रहा है ज़िन्दगी पर इस तरह माज़ी का[6] हाल,
खन्दाज़न हो[7] जिस तरह इस्मत पे[8] क़हबा का[9] जमाल[10]।

एक जानिब हैं वहीं इन बेनवाओं के[11] गिरोह,
हां उन्हीं बे-नानो-बेपोशिश[12] गदाओं के[13] गिरोह।

जिनके दिल कुचले हुए, जिनकी तमन्ना पायमाल,
झांकता है जिनकी आंखों से जहन्नुम का जलाल।

ऐ ख़ुदा-ए-दोजहां, ऐ वो जो हरइक दिल में है,
देख तेरे हाथ का शहकार[14] किस मंज़िल में है।

जानता हूं मौत का हमसाज़ो-हमदम[15] कौन है,
कौन है परवरदिगारे-बज़्मे-मातम[16] कौन है?

---

१. जीवन को २. मृत्यु का पाठ ३. राज-सभा ४. सोने-चांदी (धन-दौलत) का ५. जगह ६. अतीत का ७, हंस रहा हो ८. सतीत्व पर ९. वेश्या का १०. सौंदर्य ११. दरिद्रों के १२. रोटी-कपड़े से रहित १३. भिखारियों के १४. महान् कलाकृति १५. मित्र २६. शोक-सभा का पालक

कोढ़ के धब्बे छुपा सकता नहीं मलबूसे-दीं[१],
भूख के शोले बुझा सकता नहीं रूहुग्रलग्रमीं[२]।

ऐ जवां - साले - जहां[3], जाने - जहाने - ज़िन्दगी[४],
सारबाने - ज़िन्दगी[५], रूहे - रवाने - ज़िन्दगी[६]।

जिसके खूने - गर्म से बज़्मे - चिराग़ां[७] ज़िन्दगी,।
जिसके फ़िर्दौसी[८] तनफ़्फ़ुस से[९] गुलिस्तां ज़िन्दगी।

बिजलियां जिसकी कनीज़ें[१०] ज़लज़ले[११] जिसके सफ़ीर[१२],
जिसका दिल खैबर-शिकन[१३],जिसकी नज़र ग्रर्जुन का तीर।

ग्रा इन्हीं खंडरों पे ग्राज़ादी का परचम खोल दें!
ग्रा इन्हीं खंडरों पे ग्राज़ादी का परचम[१४] खोल दें!!

◇ ◇ ◇

१. धर्म-रूपी वस्त्र २. खुदा ३. जवान संसार ४. जीवन-रूपी संसार की ग्रात्मा ५. जीवन का मालिक ६. जीवन की ग्रात्मा ७. दीपों से भरी सभा ८. जन्नत की हवा जैसे ९. श्वासों से १०. सेविकाएं ११. भूकम्प १२. दूत १३. पहाड़ तोड़ डालने (की शक्ति रखने) वाला १४. पताका

इन्क़िलाब

ऐ जाने - नग़मा[1] जहां[2] सोगवार[3] कब से है,
तेरे लिए ये ज़मीं बेक़रार कब से है,
हुजूमे - शौक़[4] सरे - रहगुज़ार[5] कब से है,
गुज़र भी जा कि तेरा इन्तिज़ार कब से है।

न ताबनाकी-ए-रुख़[6] है, न काकुलों का[7] हुजूम,
है ज़र्रा - ज़र्रा परीशां, कली-कली मग़मूम,
है कुल जहां मुतअफ़्फ़न[8] , हवायें सब मसमूम[9],
गुज़र भी जा कि तेरा इन्तिज़ार कब से है।

रुख़े-हयात पे[10] काकुल की बरहमी[11] ही नहीं,
निगारे-दहर में[12] अन्दाज़े-मरियमी[13] ही नहीं,
मसीह-ओ-खिज्र[14] की कहने को कुछ कमी ही नहीं,
गुज़र भी जा कि तेरा इन्तिज़ार कब से है।

१. नग़मे की आत्मा २. जहान, संसार ३. शोक-ग्रस्त ४. शौक़ का दल (आधिक्य) ५. राह में ६. चेहरे की चमक ७. केशों का ८. दुर्गंध-युक्त ९. विषैली १०. जीवन के चेहरे पर ११. बिखराव १२. संसार-रूपी सुन्दरी में १३. मरियम का सा चलन १४. हज़रत मसीह और हज़रत खिज्र (पथ-प्रदर्शक)

हयात-बख़्श[1] तराने असीर[2] हैं कब से,
गुलू-ए-ज़ोहरा में[3] पेवस्त तीर हैं कब से,
क़फ़स[4] में बन्द तेरे हम-सफ़ीर[5] हैं कब से,
गुज़र भी जा कि तेरा इन्तिज़ार कब से है !

हरम के दोश पे[6] उक़्बा का[7] दाम[8] है अब तक,
सिरों में दीन[9] का सौदा-ए-ख़ाम[10] है अब तक,
तवह्हुमात का[11] आदम[12] ग़ुलाम है अब तक,
गुज़र भी जा कि तेरा इन्तिज़ार कब से है !

अभी दिमाग़ पे क़हबा-ए-सीमो-ज़र[13] है सवार,
अभी रुकी ही नहीं तेशाज़न के[14] ख़ून की धार,
शमीमे-अद्ल से[15] महकें ये कूचा-ओ-बाज़ार,
गुज़र भी जा कि तेरा इन्तिज़ार कब से है !

◇ ◇ ◇

१. जीवन-दाता २. बन्दी ३. सितारों ऐसी सुन्दरी के गले में ४. पिंजरे में ५. साथी ६. मस्जिद के कंधे पर ७. परलोक का ८. जाल ९. धर्म १०. कच्चा उन्माद ११. भ्रमों का १२. मानव १३. धन-दौलत की वेश्या १४. फ़रहाद (मज़दूर) के १५. न्याय-रूपी सुगन्धित पवन से

जंग

निकले दहाने-तोप से[1] बर्बादियों के राग,
बाग़े-जहां में[2] फैल गई दोज़ख़ों की आग।

क्यों टिमटिमा रही है ये फिर शम्मए-ज़िन्दगी[3] ,
फिर क्यों निगारे-हक़ पे[4] हैं आसारे-बेवगी[5] ।

इफ़रीते-सीमो-ज़र के[6] कलेजे में क्यों है फांस,
क्यों रुक रही है सीने में तहज़ीबे-नौ की[7] सांस ।

अम्न-ओ-अमाँ की नब्ज़ छुटी जा रही है क्यों ?
बालीने-ज़ीस्त[8] , आज अजल[9] गा रही है क्यों ?

अब दुल्हनों से छीन लिया जाएगा सुहाग,
अब अपने आंसुओं से बुझायें वो दिल की आग ।

बरबत-नवाज़ बज़्मे-अलूही[10] इधर तो आ,
दावत-दहे - पयामे - उबूदी[11] इधर तो आ ।

१. तोप के मुंह से २. संसार-रूपी उपवन में ३. जीवन का दीपक ४. सच्चाई-रूपी सुन्दरी पर ५. विधवा होने के लक्षण ६. सोने-चांदी के देव के ७. नई सभ्यता की ८. जीवन की अटारी पर ९. मृत्यु १०. अध्यात्मवादियों की सभा में गाने वाला ११. उपासना का निमन्त्रण देने वाले

इन्सानियत के ख़ून की अर्ज़ानियां[1] तो देख,
इस आस्मान वाले की बेदादियां[2] तो देख।

मासूमा - ए - ह्यात को[3] बे-चादरी तो देख,
दस्ते-हवस से[4] हुस्न की ग़ारतगरी[5] तो देख।

ख़ुद अपनी जिन्दगी पे पशेमाँ[6] है जिन्दगी,
क़ुर्बान - गाहे - मौत[7] पे रक़्सां[8] है जिन्दगी।

इन्सान रह सके कोई ऐसा जहाँ भी है?
इस फ़ित्ना-जा ज़मीं का[9] कोई पासबां[10] भी है?

ओ आफ़ताबे-रहमते-दौराँ[11] तुलूअ्[12] हो!
ओ अंजुमे - हमीयते - यज़्दाँ[13] तुलूअ् हो!!

◇ ◇ ◇

१. सस्तापन २. अत्याचार ३. जीवन-रूपी अबोध कुमारी की ४. वासना के हाथ से ५. ध्वंस ६. लज्जित ७. मृत्यु के बलिदान-घर ८. नृत्यशील ९. उपद्रवकारी धरती का १०. रक्षक ११. संसार के दयाशील सूरज १२ उदय १३. ख़ुदा की ग़ैरत के तारे

जंगे-आज़ादी

ये जंग है जंगे - आज़ादी
आज़ादी के परचम के[1] तले

हम हिन्द के रहने वालों की महक़ूमों की[2], मजबूरों की
आज़ादी के मतवालों की दहक़ानों की[3], मज़दूरों की

ये जंग है जंगे - आज़ादी
आज़ादी के परचम के तले

सारा संसार हमारा है पूरब, पच्छम, उत्तर, दक्खन
हम अफ़रंगी, हम अमरीकी हम चीनी जांबाज़े - वतन[4]
हम सुर्ख़ सिपाही ज़ुल्म-शिकन[5] आहन-पैकर[6], फौलाद बदन[7]

ये जंग है जंगे - आज़ादी
आज़ादी के परचम के तले

वो जंग ही क्या वो अम्न ही क्या दुश्मन जिसमें ताराज[8] न हो
वो दुनिया, दुनिया क्या होगी जिस दुनिया में सौराज न हो
वो आज़ादी, आज़ादी क्या मज़दूर का जिसमें राज न हो

ये जंग है जंगे - आज़ादी
आज़ादी के परचम के तले

१. झंडे के २. पराधीनों की ३. किसानों की ४. देश पर जान देने वाले ५. अत्याचारों को समाप्त करने वाले ६. लोहे के बने ७. फौलाद के शरीर वाले ८. बर्बाद

लो सुर्ख़ सवेरा आता है आज़ादी का आज़ादी का
गुलनार[1] तराना गाता है आज़ादी का, आज़ादी का
देखो परचम लहराता है आज़ादी का, आज़ादी का

ये जंग है जंगे-आज़ादी
आज़ादी के परचम के तले

हम हिन्द के रहने वालों की महकूमों की, मजबूरों की
आज़ादी के मतवालों की दहक़ानों की, मज़दूरों की

ये जंग है जंगे-आज़ादी
आज़ादी के परचम के तले

◇ ◇ ◇

१. सुर्ख़

कहो हिन्दोस्तां की जय !

कहो हिन्दोस्तां की जय !
कहो हिन्दोस्तां की जय !!

क़सम है ख़ून से सींचे हुए रंगीं गुलिस्तां की
क़सम है ख़ूने-दहक़ां की[1] , क़सम ख़ूने-शहीदां की[2]
ये मुमकिन है कि दुनिया के समुन्दर ख़ुश्क हो जायें
ये मुमकिन है कि दरिया बहते-बहते थक के सो जायें
जलाना छोड़ दें दोज़ख़ के अंगारे ये मुमकिन है
रवानी तर्क कर दें[3] बर्क़ के[4] धारे ये मुमकिन है
ज़मीने-पाक[5] अब नापाकियों को[6] ढो नहीं सकती
वतन की शम्मए-आज़ादी[7] कभी गुल हो नहीं सकती[8]

कहो हिन्दोस्तां की जय !
कहो हिन्दोस्तां की जय !!

वो हिन्दी नौजवां यानी अलमबरदारे-आज़ादी[9]
वतन का पासबां[10] वो तेग़े-जौहरदारे-आज़ादी[11]
वो पाकीज़ा शरारा[12] बिजलियों ने जिसको धोया है
वो अंगारा कि जिसमें ज़ीस्त ने[14] ख़ुद को समोया है

१. किसान के लहू की २. शहीदों के ख़ून की ३. (तीव्र) गति छोड़ दें ४. बिजली के ५. पवित्र धरती ६. अपवित्रताओं को ७. स्वतन्त्रता का दीपक ८. बुझ नहीं सकता ९. स्वतन्त्रता के ध्वजावाहक या नेता १०. रक्षक ११. स्वतन्त्रता की चमत्कारपूर्ण तलवार १२. चिंगारी १३. जीवन ने

वो शम्मए-ज़िन्दगानी आंधियों ने जिसको पाला है
इक ऐसी नाव तूफ़ानों ने खुद जिसको संभाला है
वो ठोकर जिससे गेती[1] लर्ज़ा-बरअंदाम[2] रहती है
वो धारा जिसके सीने पर अमल की[3] नाव बहती है
छुपी खामोश आहें शोरे-महशर[4] बनके निकली हैं
दबी चिंगारियां खुरशीदे-खावर[5] बनके निकली हैं
बदल दी नौजवाने-हिन्द ने तक़दीर ज़िंदां की[6]
मुजाहिद[7] की नज़र से कट गई ज़ंजीर ज़िंदां की
कहो हिन्दोस्ताँ की जय !
कहो हिन्दोस्तां की जय !!

१. संसार २. भयभीत ३. कार्य की ४. प्रलय-काल का शोर
५. पूरब से निकलने वाला सूरज ६. बन्दी-घर की ७. धर्म-योद्धा

क़लंदर

(चित्रकार 'चुग़ताई' का एक चित्र देखकर)

तेरी नज़रों की ज़द को[1] आस्मां वालों से पूछूंगा,
मकां[2] वालों से क्या, मैं लामकां[3] वालों से पूछूंगा।

हुनरवर को[4] सिला[5] सनअ़तगरी का[6] मिल गया होगा,
क़लंदर की नज़र को देखकर दिल हिल गया होगा।

जुनूं को[7] आम करदे, दहर को[8] ज़ेरो-ज़बर[9] कर दे,
इन्हीं बेबाक नज़रों को ज़रा बेबाकतर कर दे।

ग़लत-आहंग[10] साज़े-ज़िन्दगी[11] बर्बाद हो जाये,
जहाने-नग़मा[12] क़ैदे-साज़ से[13] आज़ाद हो जाये।

तेरा रक़्से-जुनूं[14] हमसाज़े-इसराफ़ील[15] हो जाये,
ये बज़्मे-ग़ैर, बज़्मे-ख़ास में तबदील हो जाये।

◇ ◇ ◇

१. पहुंच या पकड़ को २, ३. जिनका कोई स्थान हो और जिनका कोई स्थान न हो ४. कलाकार को ५. इनाम ६. कारीगरी का ७. उन्माद को ८. संसार को ९. उथल-पुथल १०. ग़लत गाने वाला ११. जीवन का साज़ १२. नग़मों का संसार १३. साज़ की क़ैद से १४. उन्मादपूर्ण नृत्य १५. इसराफ़ील : प्रलय के दिन शंख फूंकने वाला फ़रिश्ता

स्टालेन

(काज़ाकिस्तान के तातारी कवि 'जाबर जम्बूल' की कविता का स्वतंत्र अनुवाद)

सफ़े-आदा के[१] मुक़ाबिल[२] है हमारा रहबर[3]
अस्तालेन
मादरे-रूस की[४] आंखों का दरख़्शां[५] तारा
जिसकी ताबानी से[६] रोशन है ज़मीं
वो ज़मीं और वो वतन
जिसकी आज़ादी का ज़ामिन[७] है शहीदों का लहू
जिसकी बुनियाद में जमहूर का[८] अर्क़[९]
उनकी मेहनत का, उख़ुव्वत का[१०], मुहब्बत का ख़मीर
वो ज़मीं
उसका जलाल
उसका हशम[११]
क्या मैं इस रज़्म का[१२] ख़ामोश तमाशाई बनूं
क्या मैं जन्नत को जहन्नुम के हवाले कर दूं
क्या मुजाहिद[१३] न बनूं

---

१. शत्रुओं की पंक्ति के २. सामने ३. नेता ४. रूस की धरती-माता की ५. चमकता हुआ ६. चमक से ७. गवाह ८. जनता का ९. पसीना १०. भाई-चारे का ११. दबदबा १२. युद्ध १३. धर्म-योद्धा

क्या मैं तलवार उठाऊं न वतन की ख़ातिर
मेरे प्यारे, मेरे फ़िर्दौस[1] बदन की ख़ातिर
ऐसे हंगामे-क़यामत में[2] मेरा नग़्मा-ए-शौक़[3]
क्या मेरे हमवतनों के दिल में
ज़िन्दगी-ओ-मसर्रत बनकर
न समा जायेगा ?
क़ुर्रत-उल-ऐन[4] ! मेरी जाने-अज़ीज़[5]
ओ मेरे फ़र्ज़न्दो[6] !
बर्क़-पा[7] वो मेरा रहवार[8] कहां है लाना
तिश्ना-ए-ख़ूं[9] मेरी तलवार कहां है लाना
मेरे नग़्मे तो वहां गूंजेंगे
है मेरा क़ाफ़िला-सालार[10] जहां अस्तालेन

वो मेरा मुल्के-जवां
वो मेरा बादा-ए-अहमर[11] का जवां-साल[12] सुबू[13]
मेरी नौख़ेज़[14] मसर्रत का जहां
वो मेरा सर्वे-रवां[15], मुल्के-जवां

१. जन्नत २. प्रलय के से हंगामे में ३. शौक़ का नग़्मा ४. आंखों की ठंडक ५. प्यारी जान ६. सपूतो ७. बिजली के पैरों वाला (तीव्रगामी) ८. घोड़ा ९. ख़ून की प्यासी १०. नेता ११. सुर्ख़ शराब १२. जवान १३. घड़ा १४. नव-स्फुटित १५. सर्व नामक वृक्ष की तरह सीधा (तना हुआ और आगे बढ़ता हुआ)

'दिलदालजरम'—ख़ताकार[1] दरिन्दों ने जहां
अपने नापाक[2] इरादों से क़दम रक्खा है
एक नौखेज़[3] कली, एक नौ-आग़ाज़[4] बशर[5]
वो मेरा मुल्के-जवां
सच कहा है कि "ज़मीं के कीड़े
अपनी बेवक़्त अजल से[6] डर कर
थरथराते हुए, सहमे हुए, घबराये हुए
निकल आए हैं बिलों से बाहर"
अपने फ़ौलाद से रौज़न के[7] दहन[8] बन्द करो
और फ़ाशिस्त शग़ालों से[9] कहो
लुक़्मा-ए-अव्वल-ओ-आख़िर[10] है यही
क़ुर्रत-उल-ऐन ! मेरी जाने-अज़ीज़
ओ मेरे फ़र्ज़न्दो !

बर्क़-पा वो मेरा रहवार कहां है लाना
तिश्ना-ए-खूं मेरी तलवार कहां है लाना
मेरे नग़मे तो वहां गूंजेंगे
है मेरा क़ाफ़िला-सालार जहां अस्तालेन

---

१. अपराधी   २. अपवित्र   ३. नव-स्फुटित   ४. नवजात
५. मनुष्य   ६. मृत्यु से   ७. छिद्र के   ८. मुंह   ९. गीदड़ों से
१०. पहला और आखरी कौर

यही महशर[1] है, दो-आलम का[2] तसादम[3] है यही
एक पुराना आलम[4]
एक नया
एक मरती हुई बुढ़िया का लंगड़ता हुआ पांव
एक ढलती हुई छाँव
दूसरा—एक उभरते हुए सीने का शबाब
तेज़ और तुन्द शराब
पेट से रेंगने वाले ये नजिस[5] और नापाक[6]
सूसमार[7]
दौरे - वहशत[8] के दरिन्दे
मूज़ी
दहने-आज़-ओ-हलाकत का[9] शिकंजा लेकर
मेरे शाहीं के[10] खिलाफ़
रात-दिन हैं कि चले आते हैं
नहीं जायेंगे कभी रायगां[11] मेरे नग़मे
और मेरे हम-वतनों के नग़मे
मेरे शाहीन तो मन्सूरो-मुज़फ़्फ़र[12] ही रहे हैं दायम[13]

---

१. प्रलय-काल २. द्वैलोक का ३. टकराव ४. दुनिया ५, ६. अपवित्र ७. गोह नामक एक जानवर ८. प्रारम्भिक या पशुता-काल के ९. लालच और वध के मुंह का १०. बाज पक्षी ११. व्यर्थ १२. विजयी १३. नित्य

सूसमाराने-ख़िज़िंदा[1] दरगोर[2]
मेरा शाहीन, मेरा अस्तालेन
मेरे शाहीं बच्चे जिनका अभी नाम नहीं
सुर्खरू और सरअफ़राज़[3] फ़िज़ाओं में[4] बुलंद
हां मेरे हमवतनो
जाओ और अपने समुन्द्रों को तो महमेज़[5] करो।
सुर्ख़ फ़ौजों में मिलो
जू-ए-पुरजोश[6] बनो, बर्क़ का[7] सैलाब बनो और बहो
इक दहकते हुए पिघले हुए लोहे का समुन्दर बनकर
ग़ज़ब-आलूद[8] भंवर बन जाओ
और फ़ाशिस्त ख़नाज़ीर को[9]
फ़िन्नार करो[10]
मेरे 'बल्ख़ाश' कहां है वो मसे-सुर्ख़[11] तेरा
उससे कहना सरे-दुश्मन पे गिरे शिल[12] बनकर
बहरे-अख़ज़र के[13] ओ माहीगीरो ! ग़ोताज़नो[14] !
अपना ज़ख़ीरा लाओ
और क़ुर्बाने-वतन कर डालो

---

१. क़ब्रें खोदने वाले जानवर गोह या बिज्जू २. (मरकर) क़ब्र में पहुंच चुके हैं ३. सिद्ध और सफल ४. वातावरण में ५. एड़ लगाओ ६. जोशभरी नदी ७. बिजली का ८. प्रचंड ९. सूअरों को १०. आग में झोंक दो ११. सुर्ख़ तांबा १२. बर्छी १३. अख़ज़र सागर के १४. डुबकी लगाने वालो

मअ़दनों से[1] कहो और खेतों को आवाज़ तो दो
लायें वो अपने सिनो-साल का[2] हासिल[3] लायें
और क़ुर्बाने-वतन कर डालें
ये हैं रहवार[4] , ये पशमीना है, ये खिरमन[5] हैं
मेरे महबूब वतन
सब के सब तेरे हैं, सब तेरे हैं
एस्तालेन ने मैदां में बुलाया है हमें
कस्ब[6] और जहद का[7] पैग़ाम सुनाया है हमें
ख़ित्ता-ए-क़ुद्स से[8] दुश्मन को निकालो बाहर
काज़किस्तान !
वतन !
अपनी ताक़त को समेटे हुए उठ
खीज़[9] बासद[10] हशमो-जाहो-जलाल[11]
ब-हज़ारां जबरूत[12]
एक-जां एक-जसद[13]
फूंक दे दुश्मने-नापाक की ख़ाकिस्तर को[14]

◇ ◇ ◇

१. खानों से २. आयु का ३. निष्कर्ष ४. घोड़े ५. खलिहान ६. उद्यम ७. चेष्टा, संघर्ष का ८. पवित्र धरती से ९. लहर १०. अत्यन्त ११. वैभव, मान और प्रताप के साथ १२. असाम महानता के साथ १३. तन १४. राख को

वो

वो ख़मे-गर्दन[१] , वा दस्ते-नाज़[२] , वो उनका सलाम,
अबरुओं का[३] वो तकल्लुम[४] , वो निगाहों का पयाम।

बोलती आंखों का रस, गुलरंग आ़रिज़ का[५] जमाल[६] ,
मुस्कराता-सा तसव्वुर[७] , गुनगुनाता-सा ख़याल।

एक ऐसा ग़म, जो आंसू बनके बह सकता नहीं,
दिल जिसे महसूस कर सकता है, कह सकता नहीं।

और क्या होगी किसी की कायनाते - सालो - सिन[८],
इश्क़ की दो-चार रातें, हुस्न के दो-चार दिन।

आह पहले ना-रसा[९] थी, अब कहीं रुकती नहीं,
अब किसी के आस्ताने पर[१०] जबीं[११] झुकती नहीं।

◇ ◇ ◇

१. गर्दन का मुड़ाव २. सुन्दर हाथ ३. भृकुटियों का ४. वार्ता ५. पुष्पवर्ण गालों का ६. सौन्दर्य ७. कल्पना ८. आयु-भर की पूंजी ९. न पहुंचने वाली १०. चौखट पर ११. माथा

इक़बाल[1]

इस अंधेरे में ये कौन आतिश-नफ़स[2] गाने लगा,
जानिबे-मशरिक़[3] उजाला-सा नज़र आने लगा।

मौत की परछाइयां छटने लगीं छटने लगीं,
ज़ुल्मतों की[4] चादरें हटने लगीं हटने लगीं।

इक शरारा उड़ते-उड़ते आस्मानों तक गया,
आस्मां के नूर-पैकर[5] नौजवानों तक गया।

आलमे - बाला पे[6] बाहम[7] मश्वरे होने लगे,
आस्मानों पर ज़मीं के तज़्किरे होने लगे।

फिर अंधेरे में वही आतिश-नवा[8] पाया गया,
ज़िन्दगी के मोड़ पर गाता हुआ पाया गया।

वो नक़ीबे - ज़िन्दगी[9] शामो - सहर गाता गया,
कू-ब-कू[10], कूचा-ब-कूचा, दर-ब-दर गाता गया।

गीत सुनने के लिए खल्क़े - ख़ुदा आने लगी,
गर्दनों को जुंबिशें देकर[12] ये फ़र्माने लगी।

---

१. प्रसिद्ध उर्दू शायर २. जिसके श्वासों में आग भरी हो ३. पूरब की ओर ४. अँधेरों की ५. साक्षात् प्रकाश ६. स्वर्गलोक पर ७. आपस में ८. अग्निभाषी ९. जीवन-नेता १०. गली-गली ११. जनता १२. हिला-हिलाकर

नग़मा - ए - जबरील[1] है इन्सान का गाना नहीं,
सूरे - इसराफ़ील[2] है, दुनिया ने पहचाना नहीं।
अ़र्श की[3] क़ंदील[4] है, इक आस्मानी राग है,
राग क्या है, सिर से पा तक इश्क़ की इक आग है।

◇ ◇ ◇

१. अनुकम्पा के फ़रिश्ते का नग़मा २. प्रलय के दिन शंख फूंकने धाले फ़रिश्ते के शंख की आवाज़ (जिससे क़ब्रों में से मुर्दे निकल आयेंगे) ३. सबसे ऊंचे आकाश की ४. दीप-पात्र

तूर*

यहीं की थी मुहब्बत के सबक़ को[1] इब्तिदा[2] मैंने,
यहीं देखे थे इश्वे[3] नाजो - अंदाज़े - हया[4] मैंने,
यहीं की जुर्रते - इज़हारे - हर्फ़े - मुद्दआ[5] मैंने,
यहीं पहले सुनी थी दिल धड़कने की सदा[6] मैंने,
यहीं खेतों में पानी के किनारे, याद है अब भी !

दिलों में इज़दहामे - आरज़ू[7], लब[8] बन्द रहते थे,
नज़र से गुफ़्तगू होती थी, दम उल्फ़त का[9] भरते थे,
न माथे पर शिकन होती, न जब तेवर बदलते थे,
ख़ुदा भी मुस्करा देता था जब हम प्यार करते थे,
यहीं खेतों में पानी के किनारे, याद है अब भी !

वो क्या आता कि गोया दौर में जामे-शराब आता,
वो क्या आता, रंगीली रागनी, रंगीं रबाब आता,
मुझे रंगीनियों में रंगने वो रंगीं सहाब[10] आता,
लबों की मय पिलाने भूमता मस्ते-शबाब[11] आता,
यहीं खेतों में पानी के किनारे, याद है अब भी !

---

* तूर नामक पर्वत जिसपर हज़रत मूसा ने ख़ुदा से बातें की थीं।

१. पाठ की २. शुरूआत ३. अदायें ४. लज्जा के हाव-भाव ५. मनोकामना के प्रकटीकरण का साहस ६. आवाज़ ७. आकांक्षाओं का तूफ़ान और शोर ८. होंट ९. प्रेम का १०. मेघ ११. यौवन में मस्त

हया के[१] बोझ से जब हर क़दम पर लग़्ज़िशें[२] होतीं,
फ़िज़ा में[३] मुन्तशिर रंगीं बदन की लर्ज़िशें[४] होतीं,
रबाबे-दिल के[५] तारों में मुसलसल जुंबिशें[६] होतीं,
ख़िफ़ा-ए-राज़ की[७] पुरलुत्फ़ बाहम[८] कोशिशें होतीं,
यहीं खेतों में पानी के किनारे, याद है अब भी !

बहे जाते थे बैठे इश्क़ के ज़रीं सफ़ीनें में[९],
तमन्नाओं का तूफां करवटें लेता था सीने में,
जो छू लेता मैं उसको वो नहा जाता पसीने में,
मये - दोआतशा के[१०] से मज़े आते थे जीने में,
यहीं खेतों में पानी के किनारे, याद है अब भी !

बला-ए-फ़िक्रे-फ़र्दा[११] हमसे कोसों दूर होती थी,
सरूरे - सरमदी से[१२] ज़िन्दगी माअ़मूर[१३] होती थी,
हमारी ख़लवते - मासूम[१४] रश्के-तूर[१५] होती थी,
मलक[१६] झूला झुलाते थे, ग़ज़लख्वां हूर होती थी[१७],
यहीं खेतों में पानी के किनारे, याद है अब भी !

न अब वो खेत बाक़ी हैं न वो आबे-रवां[१८] बाक़ी।
मगर उस ऐशे-रफ़्ता का[१९] है इक धुँदला निशां बाक़ी ॥

◇ ◇ ◇

१. लज्जा के २. डगमगाहटें ३. वातावरण में ४. कपकपाहटें ५. दिल-रूपी साज के ६. निरंतर हलचल ७. भेद छुपाने की ८. परस्पर ९. स्वर्ण-नौका में १०. दो बार खैंची हुई (तेज़) शराब ११. कल की चिन्ता की बला १२. स्थायी नशे से १३. परिपूर्ण १४. मासूम एकांत १५. तूर के लिए ईर्ष्या १६. फ़रिश्ते १७. हूर गीत गाती थी १८. बहता पानी १९. बीती हुई ऐश

क़मर[1]

शफ़क़ की[2] पीठ के पीछे से आ रहा है क़मर,
ज़मीं पे नूर की[3] चादर बिछा रहा है क़मर।
दरख़्त[4] चांदी के, उनके समर[5] भी चांदी के,
हर इक हसीं को हसीं-तर बना रहा है क़मर।
हयाते-नौ[6] मुझे आवाज़ दे रही है, सुनो,
दबी ज़बान में कुछ गुनगुना रहा है क़मर।
निगाहे-यार से[7] जा-जाके मिल रही है निगाह,
जुनूनो-हुस्न को[8] बाहम[9] मिला रहा है क़मर।
किसी का रू-ए-मुबीं[10] फिर रहा है आंखों में,
रुला-रुला के मुझे मुस्करा रहा है क़मर।
भुला रहा था जिसे मैं फ़रेब दे-देकर,
वही हिकायते-शीरीं[11] सुना रहा है क़मर।
फ़लक पे[12] अब्र के[13] उड़ते हुए जज़ीरों में[14],
ज़मीं के दर्द को ऊपर बुला रहा है क़मर।

१. चांद २. क्षितिज की ३. प्रकाश की ४. वृक्ष ५. फल ६. नव-जीवन ७. प्रेयसी की नज़र से ८. सौंदर्य और प्रेम को ९. परस्पर १०. स्पष्ट मुखड़ा ११. मृदुल कथा १२. आकाश पर १३. बादल के १४. टापुओं में

ये किस ग़रीब के सीने से हूक उठती है,
लरज़ रहे हैं[१] महल, थरथरा रहा है क़मर।
उदास रात है, इफ़्लास[२] है, गुलामी है,
कफ़न से मुंह को निकाले डरा रहा है क़मर।
कहां है साक़ी-ए-गुलरू[3], कहां है सुर्ख़ शराब,
फ़साना-ए-ग़मे-गेती[४] सुना रहा है क़मर।

◇ ◇ ◇

१. कांप रहे हैं २. निर्धनता ३. फूल-जैसे मुखड़े वाला साक़ी
४. सांसारिक दुखों की गाथा

रूहे-फ़ग़फ़ूर[1]

दुख़्तरे - ख़्वाजगो[2] , रूहे - ग़ारतगरी[3],
मौत की हम-सफ़र, मरघटों की परी ।
जिहल-ओ-इफ़्लास के[4] तख़्त पर जल्वागर[5],
कुछ पुजारी इधर, कुछ पुजारी उधर ।
वो शब - अंदाम[6] , वो क़ब्र की तीरगी[7],
मेरे घर में कल यक-ब-यक[8] घुस गई ।
नाचती, कूदती, शोर करती हुई ,
मेरी ख़ुशियों से जेबों को भरती हुई ।
परचमे-ग़म[9] हवा में नचाती हुई,
मुस्कराती हुई खिलखिलाती हुई ।
एड़ियों से दिलों को कुचलती हुई,
ख़ून पी-पी के गिरती, उभरती हुई ।
मौत से कह रही थी वो यूं दम-ब-दम,
ऐ मेरी हमनफ़स[10], ऐ मेरी हमक़दम[11] ।

---

१. फ़ग़फ़ूर चीन के प्राचीन राजाओं की उपाधि २. बादशाही की बेटी ३. ध्वंस की आत्मा ४. मूर्खता और दरिद्रता के ५. सुशोभित ६. गहरी और काली रात ७. अंधकार ८. एकाएक ९. ग़म की पताका १०. सह-प्राणी १२. सहचर

तेरे तरकश में क्या है जो मुझ में नहीं,
कौन-सी वो बला है जो मुझमें नहीं।
क्या मुझे जूअ़्-ए-अर्ज़ी ने[1] पाला नहीं,
क्या ये इन्सान मेरा निवाला नहीं।
पुश्ते - गेती[2] पे मैं भी तो नासूर हूं,
देख तो कौन हूं, 'रूहे - फ़ग्फ़ूर' हूं।

◇ ◇ ◇

१. धरती की भूख ने २. दुनिया की पीठ पर

जवानी

बेदार[1] हुई मेह्रे - जवानी की[2] शुआएँ[3] ,
पड़ने लगीं आलम की[4] उसी सिम्त[5] निगाहें ।

ख़्वाबीदा[6] थे जज़्बात, बदलने लगे करवट,
रू - ए - शररे - तूर से[7] हटने लगा घूंघट ।

भरने लगे बाज़ू तो हुए बन्दे-क़बा[8] तंग,
चढ़ने लगा तिफ़्ली पे[9] जवानी का नया रंग ।

साग़र की खनक बन गई उस शोख़ की आवाज़,
बरबत को[10] हुई गुदगुदी या जाग उठे साज़ ।

अअ्ज़ा में[11] लचक है तो है इक लोच कमर में,
अअ्साब में[12] पारा है तो बिजली है नज़र में ।

आने लगी हर बात पे रुक-रुक के हंसी अब,
रंगीन तमव्वुज से[13] गिरांबार[14] हुए लब[15] ।

१. जाग्रत २. जवानी के सूरज की ३. रश्मियां ४. दुनिया की ५. ओर . स्वप्नमग्न ७. 'तूर' के अग्निकणों के चेहरे पर से ८. लबादे (वस्त्रों) के बन्द ९. बचपन पर १०. एक साज ११. अंगों में १२. स्नायुओं में १३. तरंग से १४. बोझल १५. होंठ

वो देख बदलते हुए पहलू कोई उट्ठा,
वो देख बिगाड़े हुए गेसू[१] कोई उट्ठा।

वो देख कि किस गुल की[२] महक फैली है हरसू[३],
वो देख कि है कौन रवां[४] बजते हैं घुंघरू।

कमबख़्त अजल[५] थी ये जवानी की क़बा में[६],
टुकड़े हैं किसी दिल के भी नक़्शे-कफ़े-पा में[७]।

◇ ◇ ◇

१. केश २. फूल की ३. चारों ओर ४. गतिशील ५. मृत्यु
६. लिबास में ७. पद-चिन्हों में

सिपाही

जाने वाले सिपाही से पूछो
वो कहां जा रहा है ?

कौन दुखिया है जो गा रही है
भूके बच्चों को बहला रही है
लाश जलने की बू आ रही है
ज़िन्दगी है कि चिल्ला रही है

जाने वाले सिपाही से पूछो
वो कहां जा रहा है ?

कितने सहमे हुए हैं नज़ारे
कैसे डर-डर के चलते हैं तारे
क्या जवानी का ख़ूं हो रहा है
सुर्ख़ हैं आंचलों के किनारे

जाने वाले सिपाही से पूछो
वो कहां जा रहा है ?

गिर रहा है सिपाही का डेरा
हो रहा है मेरी जां सवेरा
ओ वतन छोड़कर जाने वाले
खुल गया इन्क़िलाबी फरेरा[1]

जाने वाले सिपाही से पूछो
वो कहां जा रहा है ?

◇

---

१. झंडा

दो क़तए

तूने किस दिल को दुखाया है तुझे क्या मालूम ?
किस सनमख़ाने को[1] ढाया है तुझे क्या मालूम ?
हमने हंस-हंस के तेरी बज़्म[2] में ऐ पैकरे-नाज़[3] !
कितनी आहों को छुपाया है तुझे क्या मालूम ?

◇ ◇ ◇

गिरेबां चाक[4] महफ़िल से निकल जाऊं तो क्या होगा ?
तेरी आंखों से आंसू बनके ढल जाऊं तो क्या होगा ?
जुनूं की[5] लग़्ज़िशें[6] ख़ुद पर्दा-दारे-राज़े-उल्फ़त[7] हैं।
जो कहते हो संभल जाओ, संभल जाऊं तो क्या होगा ?

◇ ◇ ◇

---

१. दिल-रूपी मन्दिर (जिसमें प्रेयसी की मूर्ति थी) को २. महफ़िल ३. अभिमान की मूर्ति (प्रेयसी) ४. गिरेबान फाड़े हुए ५. उन्माद की ६. डगमगाहटें ७. प्रेम के भेद को छुपाने वाली

जहाने-नौ[1]

नग़मे शरर-फ़िशाँ हों[2] , उठा आतिशीं[3] रबाब[4] ,
मिज़राबे - बेख़ुदी से[5] बजा साज़े - इन्क़िलाब,
मेअ़मारे-अ़हदे-नौ[6] हो तेरा दस्ते-पुरशबाब[7] ,
बातिल की[8] गर्दनों पे चमक ज़ुल्फ़क़ार[9] बन !

ऐसा जहान जिसका अछूता निज़ाम[10] हो,
ऐसा जहान जिसका उख़ुव्वत[11] पयाम हो,
ऐसा जहान जिसकी नई सुबहो - शाम हो,
ऐसे जहाने-नौ का तू परवरदिगार[12] बन !

◇ ◇ ◇

१. नव-संसार २. चिंगारियां बखेरें ३. आग भरा ४. साज
५. उन्माद-रूपी छल्ले (जो सितार बजाने के लिए पहना जाता है) से
६. नये युग के निर्माता ७. यौवन से परिपूर्ण हाथ ८. असत्य
९. हज़रत मुहम्मद की दुधारी तलवार १०. व्यवस्था ११. भाई-चारा
१२. पालनहार

क़ैद

क़ैद है क़ैद की मीआ़द[१] नहीं
जौर[२] है, जौर की फ़र्याद नहीं, दाद[३] नहीं
रात है, रात की ख़मोशी है तनहाई है
दूर महबस की[४] फ़सीलों से बहुत दूर कहीं
सीना-ए-शहर[५] की गहराई से घंटों की सदा[६] आती है
चौंक जाता है दिमाग़
झिलमिला जाती है अनफ़ास की[७] लौ
जाग उठती है मेरी शम्मए-शबिस्ताने-ख़याल[८]
ज़िन्दगानी की इक-इक बात की याद आती है

शाहराहों में[९] , गली-कूचों में इन्सानों की भीड़
उनके मसरूफ़ क़दम
उनके माथे पे तरद्‌दुद के[१०] नुक़ूश[११]
उनकी नज़रों में ग़मे-दोश[१२] और अंदेशा-ए-फ़र्दा का[१३] ख़याल
सैंकड़ों-लाखों अवाम[१४]

१. अवधि २. अत्याचार ३. न्याय ४. जेलख़ाने की ५. शहर की छाती से ६. आवाज़ ७. श्वासों की ८. विचारों के शयनागार का दीपक ९. राजमार्गों में १०. परिश्रम के ११. चिह्न १२. अतीत के दुखों १३. भविष्य की आशंकाओं का १४. जनसाधारण

सैंकड़ों-लाखों क़दम
सैंकड़ों-लाखों धड़कते हुए इन्सानों के दिल
जब्रे-शाही से[1] ग़मीं[2], जौरे-सियासत से[3] निढाल
जाने किस मोड़ पे वो धम से धमाका बन जायें

सालहासाल की[4] अफ़सुर्दा-ओ-मजबूर[5] जवानी की उमंग
तौक़ो-ज़ंजीर से[6] लिपटी हुई सो जाती है
करवटें लेने में ज़ंजीर की झंकार का शोर
ख्वाब में ज़ीस्त की[7] शोरिश का[8] पता देता है
मुझको ग़म है कि मेरा गंजे-गिरांमाया-ए-उम्र
नज़रे-ज़िन्दां[9] हुआ
नज़रे-आज़ादी-ए-ज़िन्दाने-वतन[10] क्यों न हुआ ?

◇ ◇ ◇

१. शाही दमन २. पीड़ित, दुखी ३. राजनैतिक अन्याय से ४. वर्षों की ५. खिन्न और विवश ६. अपराधी के गले में डालने वाले पटे और जंजीर से ७. जीवन की ८. हंगामे का ९. जेलखाने की भेंट १०. देश-रूपी जेलखाने की स्वतन्त्रता की भेंट

चांद तारों का बन

(आज़ादी से पहले, बाद और आगे)

मोम की तरह जलते रहे हम शहीदों के तन
रात भर झिलमिलाती रही शम्मे-सुबहे-वतन[1]
रात भर जगमगाता रहा चाँद तारों का बन
तिश्नगी[2] थी मगर तिश्नगी में भी सरशार[3] थे
प्यासी आंखों के ख़ाली कटोरे लिये
मुन्तज़िर मर्दो-ज़न[4]
कब चलेगी नसीमे-बहारे-वतन[5]
मस्तियां ख़त्म, मदहोशियां ख़त्म थीं, ख़त्म था बांकपन
रात के जगमगाते दहकते बदन
सुबहदम[6] एक दीवारे-ग़म[7] बन गये
ख़ारज़ारे-अलम[8] बन गये
रात की शहरगों का उछलता लहू
जू-ए-ख़ूँ[9] बन गया
कुछ इमामाने-सद-मक्रो-फ़न[10]
उनकी सांसों में अफ़ई की[11] फुंकार थी
उनके सीने में नफ़रत का काला धुआं

१. देश के नव प्रभात का दीपक २. प्यास ३. तृप्त ४. स्त्री-पुरुष ५. देश के वसन्त की हवा ६. प्रभात होने पर ७. ग़म की दीवार ८. दुःखों का कंटीला मैदान ९. ख़ून की नदी १०. धोखेबाजों के नेता ११. नाग की

इक कमींगाह से[1]
फेंककर अपनी नोके-ज़बां[2]
ख़ूने-नूरे-सहर[3] पी गये
रात की तलछटें हैं, अंधेरा भी है
सुबह का कुछ उजाला, उजाला भी है
हमदमो[4] !
हाथ में हाथ दो
सू-ए-मंज़िल[5] चलो
मंज़िलें प्यार की
मंज़िलें दार की[6]
कू-ए-दिलदार की[7] मंज़िलें
दोश पर[8] अपनी-अपनी सलीबें उठाए चलो

◇ ◇ ◇

शत्रु के घात में छुपकर बैठने की जगह से २. ज़बान की नोक
३. सुबह के प्रकाश का रक्त ४. साथियो ५. मंज़िल की ओर
६. फांसी की मंज़िल ७. प्रेयसी की गली की ८. कंधे पर

भागमती*

प्यार से आंख भर आती है कंवल खिलते हैं
जब कभी लब पे तेरा नामे-वफ़ा आता है

दश्त की[1] रात में बारात यहीं से निकली
राग की रंग की बरसात यहीं से निकली
इन्क़िलाबात की[2] हर बात यहीं से निकली
गुनगुनाती हुई हर रात यहीं से निकली

धन की घनघोर घटायें हैं न हुन के बादल
सोने-चांदी के गली-कूचे न हीरों के महल
आज भी जिस्म के अंबार हैं बाज़ारों में
ख्वाजा-ए-शहर[3] है यूसुफ़ के[4] खरीदारों में

* शहर हैदराबाद का पहला नाम भाग नगर था जो भागमती और कुतुबशाह की प्रेम-कथा के आधार पर पड़ा था।

१. जंगल की २. क्रान्तियों की ३. राज्यपाल ४. यूसुफ़ अत्यन्त सुन्दर थे। इनके भाइयों ने ईर्ष्यावश इन्हें मिस्र के सौदागर के हाथ बेच दिया था और मिस्र के राज्यपाल की रूपवती मलका जुलेखा उन पर आसक्त हो गई थी।

शहर बाक़ी हैं, मुहब्बत का निशां बाक़ी है
दिलबरी बाक़ी है दिलदारी-ए-जां बाक़ी है
सरे - फ़हरिस्ते - निगाराने - जहां बाक़ी है[1]
तू नहीं है तेरी चश्मे - निगरां[2] बाक़ी है

◇ ◇ ◇

१. संसार की सुन्दरियों की नामावली के प्रथम नामों में बाक़ी है
२. निरीक्षक नजर

फुटकर शे'र

हयात[१] लेके चलो, कायनात[२] लेके चलो
चलो तो सारे ज़माने को साथ लेके चलो

◇ ◇ ◇

ख़लवते-रंगीं में[३] भी डसता है यूं दुनिया का हाल
जैसे पीते वक़्त भूखे बाल-बच्चों का ख़याल

◇ ◇ ◇

किधर चला दिले-दीवाना लेके अज़्मे-कलीम[४]
गदा-ए-राह[५] कहां, उसकी बारगाह[६] कहां

◇ ◇ ◇

हर तरफ़ फैली हुई है चाँदनी ही चाँदनी
जैसे वो ख़ुद साथ हैं, उनकी जवानी साथ है

◇ ◇ ◇

बात क्या थी, ज़िक्र किसका था कि हंगामे-निशात[७]
मुस्कराने वाली आंखें, हिचकियां लेने लगीं

◇ ◇ ◇

बनते रहे, बिगड़ते रहे, कारोबारे-शौक़[८]
इक हम कि आरज़ू का सहारा बने रहे

◇ ◇ ◇

मेरी आंखों की ज़बां और मेरे दिल की आवाज़
न समझने के लिए है न सुनाने के लिए

◇ ◇ ◇

१. जीवन २. सृष्टि ३. रंगीन एकांत में ४. ख़ुदा से बात करने वाले हज़रत मूसा का संकल्प ५. रास्ते का भिखारी ६. राज-सभा ७. ख़ुशी के अवसर पर ८. पसन्द-ना-पसन्द की बातें

दिनांक Date	उधारकर्त्ता की संख्या Borrower's No.	दिनांक Date	उधारकर्त्ता की संख्या Borrower's No.
25/4/90	200		
19/7/90	47		

1. Books are issued for 15 days only but may have to be recalled earlier if urgently required.
2. An over-due charge of 25 Paise per day per volume will be charged.
3. Books may be renewed on request, at the discretion of the Librarian.
4. Periodicals, Rare and Reference books may not be issued and may be consulted only in the Library.
5. Books lost, defaced or injured in any way shall have to be replaced or its double price shall be paid by the borrower.

Help to keep this book fresh, clean & moving